लेखक परिचय

महादेवी वर्मा (1907–1987)

हिंदी के महत्त्वपूर्ण काव्ययुग–छायावाद के कवि–चतुष्ट्य में से एक। प्रेम और करुणा से ओत–प्रोत काव्य गीतों एवं संस्मरणात्मक रेखाचित्रों के लिए बहुप्रशंसित। भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित। उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया और वे साहित्य अकादमी की फैलो भी रहीं। प्रमुख कृतियाँ : *नीहार, रश्मि, नीरजा, यामा, दीपशिखा* (कविता संग्रह); *शृंखला की कड़ियाँ* (निबंध); *स्मृति की रेखाएँ, अतीत के चलचित्र* (संस्मरण)।

श्रीराम शर्मा (1896–1967)

प्रारंभ में अध्यापन कार्य करने के बाद लंबे समय तक स्वतंत्र रूप से राष्ट्र और साहित्य सेवा में जुटे रहे। 'विशाल भारत' के संपादक के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त की। हिंदी में 'शिकार साहित्य' के अग्रणी लेखक माने गए। प्रमुख रचनाएँ : *शिकार, बोलती प्रतिमा* तथा *जंगल के जीव* (शिकार संबंधी पुस्तकें), *सेवाग्राम की डायरी* एवं *सन् बयालीस के संस्मरण* इत्यादि।

के. विक्रम सिंह (1938–2013)

अध्यापन कार्य से प्रारंभ कर सरकारी नौकरी में विभिन्न महकमों में उच्च पदों पर कार्यरत रहे। सूचना और प्रसारण मंत्रालय में निदेशक (फिल्म नीति) के पद पर

कार्य करते हुए समय से पहले ही नौकरी को विदा कह अपनी विशेष दिलचस्पी के कारण सिनेमा और टेलिविज़न के क्षेत्र में सक्रिय हो गए।

विकास, पर्यावरण और देशाटन की ओर विशेष झुकाव रखने वाले के. विक्रम सिंह ने 'अंधी गली' (1984), 'न्यू डेल्ही टाइम्स' (1985) के निर्माण में सहयोग करने के साथ-साथ *तर्पण* (1994) का भी निर्माण किया। उन्होंने टेलिविज़न के लिए फिल्म *सृजन* (1994) का निर्देशन तथा *कवि और कविता* शृंखला का निर्माण एवं निर्देशन भी किया। साठ से अधिक वृत्तचित्र भी बनाए।

अनेक वृत्तचित्र राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित हुए। फिल्म कार्य के साथ-साथ जीवन, समाज और कलाओं से संबंधित विषयों पर जनसत्ता में नियमित रूप से स्तम्भ लेखन किया।

धर्मवीर भारती (1926-1997)

बहुचर्चित लेखक एवं संपादक। कई पत्रिकाओं से जुड़े पर अंत में 'धर्मयुग' के संपादक के रूप में गंभीर पत्रकारिता का एक मानक निर्धारित किया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी धर्मवीर भारती की लेखनी ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना, अनुवाद, रिपोर्ताज आदि अनेक विधाओं द्वारा हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं : *साँस की कलम से, मेरी वाणी गैरिक वसना, कनुप्रिया, सात गीत-वर्ष, ठंडा लोहा, सपना अभी भी, सूरज का सातवाँ घोड़ा, बंद गली का आखिरी मकान, पश्यंती, कहनी अनकहनी, शब्दिता, अंधा युग, मानव-मूल्य और साहित्य* तथा *गुनाहों का देवता।*

धर्मवीर भारती पद्मश्री की उपाधि के साथ ही व्यास सम्मान एवं अन्य कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से अलंकृत हुए।

एस. के. पोट्टेकाट (1913-1982)

मलयालम के प्रसिद्ध कथाकार एस. के. पोट्टेकाट का पूरा नाम शंकरन कुट्टी पोट्टेकाट था। उनका जन्म केरल के कोषिकोड (कालीकट) में हुआ था। इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी करके वे साहित्य-सृजन में लग गए।

पोट्टेकाट की कहानियों में किसान और मज़दूरों की आह और वेदना का सजीव चित्रण हुआ है। जाति, धर्म और संप्रदाय से परे मानवीय सौहार्द को उभारने में पोट्टेकाट को पूरी सफलता मिली है। उनकी कहानियों से विश्वबंधुत्व और भाईचारे का संदेश मिलता है।

कथाकार पोट्टेकाट को साहित्य अकादमी तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी कहानियों का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं : *प्रेम शिशु, विषकन्या* और *मूडुपडम्*।

मधुकर उपाध्याय (1956)

मधुकर उपाध्याय ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अयोध्या से प्राप्त की। अवध विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक होने के बाद भारतीय जनसंचार संस्थान, नयी दिल्ली से उन्होंने पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया।

इतिहास और खासतौर पर ब्रितानी शासनकाल में उनकी दिलचस्पी ने उन्हें महात्मा गांधी के चर्चित दांडी मार्च की पुनरावृत्ति के लिए प्रेरित किया और उन्होंने 400 किलोमीटर से अधिक की पैदल यात्रा की। आज़ादी की पचासवीं वर्षगाँठ पर उनकी पुस्तक *पचास दिन, पचास साल पहले* खासी चर्चित रही। उनकी एक अन्य पुस्तक *किस्सा पांडे सीताराम सूबेदार* को भी काफ़ी सराहा गया।

हिंदी और अंग्रेज़ी में समान अधिकार से लिखने वाले मधुकर उपाध्याय की तीन पुस्तकें अंग्रेज़ी और बारह हिंदी में प्रकाशित हो चुकी हैं। पत्रकारिता और साहित्य के साथ-साथ उनकी गहरी दिलचस्पी कार्टून विधा और रेखांकन में भी है।

मधुकर उपाध्याय आजकल दैनिक 'लोकमत समाचार' के प्रधान संपादक हैं।